प्रश्न 2. काव्य प्रयोजन क्या है? इसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।
अथवा, काव्य प्रयोजन के संबंध में भारतीय विद्वानों के विचार क्या है? लिखें।

उत्तर—काव्य-प्रयोजन से अभिप्राय है—काव्य-रचना के उपरान्त उससे प्राप्त फल, जो कि प्रकार के व्यक्तियों को मिलता है (1) कवि को, और (2) सहृदय को, अर्थात् महाकाव्य आदि पाठक तथा नाटक के प्रेक्षक को।

विभिन्न काव्य-प्रयोजन—संस्कृत के निम्नोक्त प्रख्यात काव्यशास्त्रियों ने विभिन्न व्य-प्रयाजनों की गणना की है :

भरत—नाट्य (काव्य) धर्म, यश और आयु का साधक, हितकारक, बुद्धि का वर्द्धक तथा कोपदेशक होता है।

भामह—उत्तम काव्य की रचना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चारों पुरुषार्थों को, तथा मस्त कलाओं में निपुणता को, और प्रीति (आनन्द) तथा कीर्ति को उत्पन्न करती है।

Scanned with CamScanner

भामह के उपरान्त प्रायः सभी आचार्यों के सम्मुख इस दिशा में सम्भवतः इन्हीं का आदर्श रहा।

वामन और भोजराज—कीर्ति और प्रीति।

रुद्रट : उक्त पुरुषार्थ-चतुष्टय के अतिरिक्त अनर्थ का उपशम, विपत्ति का निवारण, रो से विमुक्ति तथा अभिमत वर की प्राप्ति।

काव्यरचना के उपरान्त प्राप्त फल।

कुन्तक—चारों पुरुषार्थों के अतिरिक्त व्यवहार के औचित्य का ज्ञान, हृदय का आह्लाद अथव अन्तश्चमत्कार।

अग्निपुराणकार—मोक्ष को छोड़कर शेष तीन पुरुषार्थ।

इस प्रकार अब मम्मट के सम्मुख काव्य-प्रयोजनों की उक्त सूची प्रस्तुत थी, जिसे उन्हों निम्नोक्त रूप में ढाल दिया :

काव्य यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥ **काव्यप्रकाश** 1, 2.

अर्थात् काव्य का प्रयोजन है, (1, 2) यश और धन की प्राप्ति, (3) व्यवहार का ज्ञान, (4 शिवेतर (रोग) का नाश, (5) तुरन्त परम आनन्द (रसास्वाद) की प्राप्ति, और (6) कान्ता-सम्मि उपदेश।

भारतीय विद्वानों के विचार—मम्मट ने उक्त छः काव्य-प्रयाजनों में से 'सद्यः परनिर्वृति अर्थात् काव्य-पठन अथवा नाटक-प्रेक्षण के साथ ही साथ 'तुरन्त परम आनन्द—रसास्वाद' क प्राप्ति को काव्य का सर्वप्रथम प्रयोजन माना है। इसके उपरान्त, स्पष्टतः, दूसरा स्थान कान्ता-सम्मि उपदेश को देना चाहिए। काव्य द्वारा प्राप्त उपदेश भी प्रेयसी द्वारा दिये गये उपदेश के समा मधुर एवं सहज मान्य होता है।

इस सम्बन्ध में एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि इन प्रयोजनों में से किन का अधिकारी कवि है और किनका सहृदय। स्पष्ट है कि यश, धन और रोग-नाश का सीधा सम्बन्ध कवि के सा है और व्यवहार-ज्ञान तथा कान्ता-सम्मित उपदेश का सीधा सम्बन्ध सहृदय के साथ किन्तु काव्य के अध्ययन-अध्यापन द्वारा कोई सहृदय यश और अर्थ भी प्राप्त कर सकते हैं, और स्वनिर्मि ग्रन्थों के द्वारा कोई कवि भी व्यवहार-ज्ञान अथवा उपदेश ग्रहण करते रहते हैं—अतः सहृद और कवि भी उक्त दो-दो प्रयोजनों के अधिकारी उपचार द्वारा माने जा सकते हैं। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि रोग-नाश नाम प्रयोजन (जैसे—'हनुमान बाहुक' की रचना से तुलसीदास को बाहुपीड़ा-रो से छुटकारा मिल गया) इस वैज्ञानिक युग में मान्य नहीं हो सकता।

शेष बचा एक प्रयोजन—रसास्वाद-प्राप्ति। मम्मट के टीकाकारों के अनुसार सहृदय की इस भोक्ता है। कवि को भी यदि अपने काव्य से रसास्वाद-प्राप्ति होगी तो उसे तत्क्षण के लि सहृदय ही मानना होगा।

कवि अपने काव्य द्वारा रसास्वाद प्राप्त करता है—इस समस्या के दो पक्ष हैं—(1) क कवि काव्य-रचना के समय रसास्वाद प्राप्त करता है? (2) क्या कवि काव्य-रचना के उपर कभी उससे रसास्वाद प्राप्त करता है? इन दोनों प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर है—'हाँ'। आइए, इस पर विचार करें—

(1) वाल्मीकि ने क्रौंच-मिथुन में से एक के वध को देखकर शोक का अनुभव किया—य तक वे सामान्य व्यक्ति हैं, किन्तु उक्त घटना के **'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः'**....'इस श्लोक-रू में परिणत होते समय कवि-रूप में वह वस्तुतः उस लौकिक घटना से ऊपर उठ चुके होते उनका यह शोक व्यक्तिनिष्ठ न रहकर समष्टिनिष्ठ बन जाता है, अर्थात् यह घटना क्रौंच पक्षी न रहकर किसी भी वियुक्त प्राणी की बन जाती है, और इसका कारण होता है कवि के इस ज एवं पूर्व जन्मों के अनुभवजन्य संस्कार। व्यक्तिनिष्ठता से रहित यह समग्र घटना कवि रसास्वाद-प्राप्ति कराती रहती है। हाँ, रचना करते समय जिन क्षणों में किसी प्रकार का चिन्तन बा उपस्थित करता है तो उन क्षणों में रसास्वाद की शृंखला टूट जाती है, किन्तु बाधा के दूर ह ही पुनः जुड़ जाती है। वस्तुतः ठीक यही स्थिति सामान्य सहृदय की भी होती है, जब उसे कि रचना को पढ़ते समय उसके किसी विषय पर कुछ विचार करना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

(2) अपनी रचना को पढ़ते समय भी कवि रसास्वाद प्राप्त करता है। यद्यपि रचना में कवि का स्वत्व विद्यमान रहता है, किन्तु तल्लीनता के कारण जब यह अपने स्वत्व को भूल जाता है तभी उसे रसास्वाद-प्राप्ति होने लगती है। हाँ, जिन क्षणों में वह इसे किसी कारणवश नहीं भूल पाता तो वे क्षण उसकी रसास्वाद-प्राप्ति में बाधक होते हैं, यद्यपि यह शृंखला तुरन्त जुड़ जाती है।

उक्त समग्र विवेचन का निष्कर्ष यह है :

1. काव्य-प्रयोजन कहते हैं काव्य द्वारा प्राप्त फल को। काव्यहेतु काव्य-रचना का कारण है। वह पूर्ववर्ती होता है, किन्तु काव्य-प्रयोजन, काव्य-रचना के उपरान्त फल की उपलब्धि है।
2. मम्मट-समस्त छः काव्य-प्रयोजनों में से सद्यः पर-निर्वृति सर्वोकृष्ट प्रयोजन है, और इसके उपरान्त कान्ता-सम्मित उपदेश का स्थान है।
3. 'दुःख का नाश' काव्य का यह प्रयोजन इस युग में अमान्य प्रतीत होता है। शेष काव्य-प्रयोजनों का सम्बन्ध कवि और सहृदय दोनों के साथ साक्षात् रूप से अथवा

Scanned with CamScanner